यूनीवार्ता के ब्यूरो प्रमुख सुभाष चंद्र निगम को सम्मानित करते शाही इमाम मुकर्रम। साथ में हैं भाजयुमो के अध्यक्ष एवं सांसद अनुराग ठाकुर, दिल्ली की महापौर रजनी अब्बी, डीजेए अध्यक्ष मनोज वर्मा एवं एनयूजे के महासचिव रासविहारी

स्थायी समिति के अध्यक्ष योगेंद्र चंदोलिया, उपाध्यक्ष सरिता चौधरी शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन अनुभूति के अध्यक्ष संजय गौतम ने किया। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम सांप्रदायिक सौहार्द की जीती जागती मिशाल है। क्योंकि इसकी शुरुआत जहां गणेश वंदना से हुई तो मुशायरे का आगाज अल्लाह के नाम से हुआ।

मुशायरे की शुरुआत शाही इमाम डॉ मुफ्ती मुकर्रम अहमद ने शमा जलाकर की। मुशायरे का संचालन करते हुए इकबाल अशहर ने कहा कि दिल्ली मिर्जा गालिब का शहर है। यहां गंगा-जमुनी तहजीब हमेशा बहती रही है। इस शहर ने शायरी और साहित्य को हमेशा सहारा दिया है। उन्होंने यहां विभिन्न संप्रदायों के बीच अटूट रिश्तों और रिवायतों पर कहा कि-

'मोहब्बत लिखने-पढ़ने में आसान है लेकिन, मोहब्बत निभाने में पसीने छूट जाते हैं'

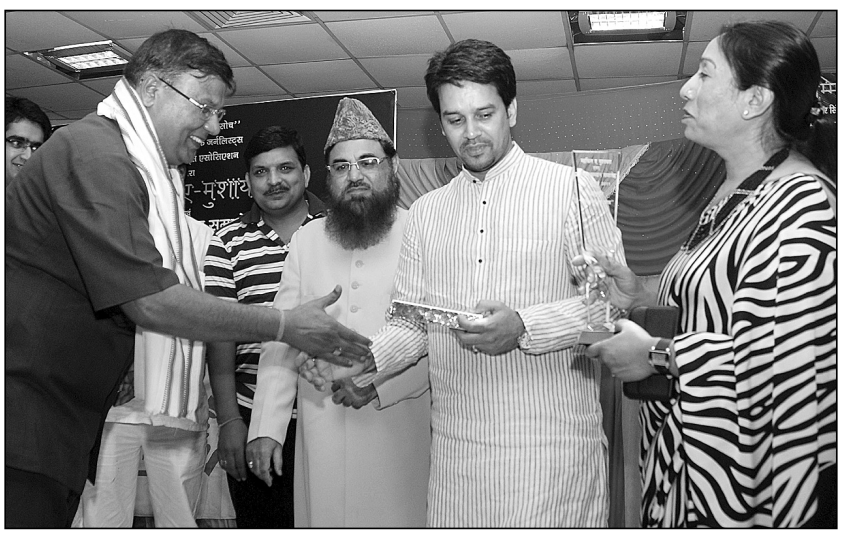

जनसत्ता के मुख्य संवाददाता मनोज मिश्र को सम्मानित करतीं महापौर रजनी अब्बी एवं अनुराग ठाकुर

कार्यक्रम की शुरुआत जहां गणेश वंदना से हुई वहीं मुशायरे की शुरुआत अख्तर बनारसी ने अल्लाह को याद कर की।

मुजफ्फर नगर से आए शायर नवैद अंजुम ने आज के हालातों पर कहा-

कोई पानी पे तिनके की तरह फिरता है आवारा,
कोई दरिया की तह में मिसले गौहर बैठ जाता है।
बन न जाऊं मैं कहीं कांटा जमाने के लिए,
सोचना पड़ता है मुझको मुस्कराने के लिए।।

हालांकि मुशायरे में एक से एक शायर ने अपनी छंटी हुई गजलें और शेर सुनाकर लोगों को दीवाना बना दिया। ोताओं का जोश देखते ही बनता था। इसके चलते मुशायरा देर रात तक चला। एक-एक शेर पर तालियों की गड़गड़ाहट वाह-वाह से पूरा हाल गूंज जाता था। सबसे ज्यादा तालियां और दाद नदीम शाद ने बटोरीं। उन्होंने अपनी गजल पढ़ने से पहले शेर पढ़ा-

'ये मशविरा है कि पत्थर बना के रख दिल को,
ये आईना ही रहा तो जरूर टूटेगा।।'

मुशायरे में हंसी की फुलझड़ियां भी जमकर चलीं। इकबाल फिरदौसी ने कुछ इस अंदाज में शेर पेश किया-

नाज इतने न हमको दिखाया करो, वादा करके कभी तो निभाया करो।
हमने माना कि टांगों में तकलीफ है, सिर के बल भी कभी चलके आया करो।।